B.A. III Pol.sc Unit-6/Paper 8th

असहयोग आंदोलन और महात्मा गाँधी

प्रश्न:- महात्मा गाँधी द्वारा शुरू किए गए 1920ई० से 1922ई० तक के असहयोग आंदोलन की आलोचनात्मक समीक्षा करें ?

या

प्रश्न:- असहयोग आंदोलन से आप क्या समझते हैं ? इस आंदोलन के उद्देश्यों और कार्यक्रमों का वर्णन करें।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारतीय में एक नये युग का आरंभ हुआ। इसे गाँधी युग कहते हैं। 1917ई० से 1947ई० तक भारतीय राजनीति की बागडोर महात्मा गाँधी के हाथों में रही। गाँधी युग के प्रारम्भ होते ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का रूप बदल गया। इसका दायरा विस्तृत हो गया। यह जन आंदोलन बन गया, गाँधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस जनता का संगठन बन गई। गाँधी-युग में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रगति और विचार धारा पूर्णतः नवीन और क्रांतिकारी बन गई।

प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों ने तन-मन-धन से अंगरेजों की सहायता की, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि भारतीय जनता अंगरेजी राज से संतुष्ट थी। युद्ध में सहयोग का कारण था कि वह लोकतंत्र की रक्षा चाहती थी और यह आशा करती थी कि युद्ध में विजय के बाद अंगरेज उसे स्वशासन का अधिकार दे देंगे। लेकिन युद्ध के बाद उसकी आशा पर पानी फिर गया और उससे असंतोष जनता में बढ़ने लगा।

युद्धोपरांत जनता में असंतोष बढ़ने के कई कारण थे।

प्रथम 1917ई० में सरकार ने एक बिल पेश किया, जो रौलट बिल के नाम से प्रसिद्ध है। इस बिल में यह व्यवस्था की गई थी कि जिस व्यक्ति पर राजद्रोह का संदेह हो या जिस व्यक्ति पर शांतिभंग होने की संभावना हो उसे गिरफ्तार कर लिया जाय।

दूसरा, खिलाफत आंदोलन मुसलमानों को अंगरेजों के खिलाफ कर दिया। तुर्की के मुसलमानों की अंगरेजों ने जो दुर्दशा की उसको देखकर भारतीय मुसलमान क्षुब्ध हो उठे। उनकी ब्रिटेन-विरोधी भावना की अभिव्यक्ति खिलाफत आंदोलन के रूप में हुई।

Scanned with CamScanner

तीसरा विश्व युद्ध भारत की आर्थिक दुर्दशा के लिए भी उत्तरदायी था। युद्ध के समय भारतीय सेना का खर्च भारत सरकार के सिर पर डाल दिया गया था।

चौथा क्षुब्ध भारतीय जनता को सरकार की सुधार नीति से भी निराशा हुई। मांटेगू-चेम्सफोर्ड सुधार देश की राष्ट्रीय आकांक्षा के अनुसार नहीं था। इससे जनता की आशा पर पानी फेर दिया, और वह अपनी माँगों को लेकर पुनः आंदोलन करने को उतावली हो गयी। महात्मा गाँधी ने उन्हें नेतृत्व प्रदान किया। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में नई जान फूंक दी।

महात्मा गाँधी एक सहयोगी के रूप में भारतीय राजनीति में प्रवेश किया। गाँधी जी गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु माना और उनके मार्ग दर्शन में कार्य प्रारम्भ किया। गाँधीजी ने पहले देश की वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना उचित समझा। देश भ्रमण के दौरान उनके जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं जिन्होंने उन्हें असहयोगी बना दिया सर्वप्रथम गाँधी जी का ध्यान चम्पारण जिले के किसानों की ओर गया। चम्पारण में निलहे गोरों की जमींदारी थी, जो अंग्रेजी सरकार के भरोसे किसानों पर अत्याचार करते थे। किसानों की हालत देखकर उन्हें बहुत दुख हुआ, इसके लिए उन्होंने सत्याग्रह किया, जिसके सम्मुख सरकार को झुकना पड़ा और किसानों की स्थिति में सुधार लाना पड़ा। गाँधी जी को विश्वास हो गया कि जनता के कष्ट निवारण हेतु सत्याग्रह एक सफल प्रयोग है।

असहयोगी गाँधी :— महात्मा गाँधी एक सहयोगी के रूप में रूप में भारतीय राजनीति में प्रवेश किया। लेकिन दो वर्षों के बाद कतिपय घटनाओं ने उन्हें असहयोगी बना दिया। सितम्बर 1920 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में असहयोग और मांट-फोर्ड सुधारों के अन्तर्गत निर्मित व्यवस्थापिका सभाओं का बहिष्कार का प्रस्ताव रखा। और 1920 ई० में देश व्यापी सत्याग्रह भी शुरू कर दिया, और देश आजादी (1947 ई० तक) तक अंग्रेजी सरकार से लड़ते रहे।

Scanned with CamScanner

युद्ध के बाद कुछ ऐसी घटनाएँ घटी जिसके कारण कांग्रेस को असहयोग आंदोलन चलाना पड़ा। इनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय है।

(i) युद्ध का परिणाम :— प्रथम विश्व युद्ध के बाद कई पराधीन प्रदेशों में लोकतंत्र की स्थापना की गई तथा कई राज्यों का निर्माण किया गया। परिणाम स्वरूप पराधीन देशों में राष्ट्रीयता की भावना का उदय हुआ तथा राष्ट्रीय आंदोलन को बल मिला।

(ii) भारत की आर्थिक दुर्दशा :— युद्ध में अत्यधिक व्यय के कारण भारत सरकार की आर्थिक हालत खराब हो गयी। मुद्रास्फीति के कारण कीमतों में वृद्धि हो गई। जनसाधारण का जीवन-निर्वहन करना कठिन हो गया।

(iii) प्लेग और इनफ्लुएंजा :— उसी समय प्लेग और इनफ्लुएंजा का प्रकोप जनता की स्थिति को और बदतर बना दिया। सरकार के द्वारा किए गये प्रयास अपर्याप्त और संतोषजनक नहीं था।

(iv) अकाल :— 1917 ई० में ओला वृष्टि के कारण देश में अकाल फैल गया। सरकार के द्वारा कोई ठोस प्रयास नहीं किए गये, जनता में असंतोष बढ़ता गया।

(v) मांट-फोर्ड सुधार से असंतोष :— युद्ध काल में सरकार द्वारा किए गये आश्वासन के कारण जनता में विश्वास हो गया था कि शासन में व्यापक और क्रांतिकारी सुधार लाए जाएँगे। सरकार ने मांट-फोर्ड सुधार लाया भी, लेकिन जनता को संतुष्ट करने के बजाय इसकी आशा पर पानी फेर दिया।

(vi) रॉलट एक्ट (Rowlatt Act) :— युद्धकाल में क्रांतिकारियों के दमन के लिए भारत सुरक्षा अधिनियम पारित किया गया था, लेकिन युद्ध के बाद भी क्रांतिकारी सक्रिय थे जिन्हें दबाने के लिए सरकार को ऐसे कानून की आवश्यकता थी। सरकार ने 1919 में रॉलट विधेयक पास की और इसे कानून का रूप दे दिया, जिसे रॉलट विधेयक कहा गया।

महात्मा गाँधी ने इसे काला अधिनियम तथा आतंकवादी अपराध अधिनियम की संज्ञा दी। रॉलट अधिनियम का देशव्यापी आन्दोलन हुआ। इस आंदोलन से पूरे देश में एकता देखने को मिली। सरकार ने आंदोलन को दबाने के लिए दमनकारी नीति अपनाया।

Scanned with CamScanner

(vii) जालियाँवाला बाग कांड :— अमृतसर की उत्तेजित जनता को कुचलने के लिए नगर को सेना के हवाले कर दिया गया था। 12 अप्रैल 1919 को शहर में सार्वजनिक सभा में प्रतिबन्ध लगा दिया गया था, जिसकी सूचना पूरी तरह से जनता को नहीं कराई गई। 13 अप्रैल को बैशाखी का त्यौहार था। इसी दिन सरकार के नीति का विरोध करने के लिए जालियाँवाला बाग में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया था। सभा शांतिपूर्वक चल रहा था, जेनरल डायर ने 200 देशी तथा 50 गोरे सिपाहियों को लेकर अचानक निहत्थी जनता पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। जेनरल डायर के इस अमानुषिक कार्रवाई के चलते 40 व्यक्ति मारे गये तथा 2000 से अधिक घायल हुए। लेकिन गिरधारी लाल ने अपने बयान में कहा कि मेरा अनुमान है कि उस समय वहाँ एक हजार से ज्यादा मृतक एवं आहत व्यक्ति थे।

(viii) सैनिक शासन :— जालियाँवाला बाग के अन्यायपूर्ण कार्य के दो दिनों बाद पंजाब के पाँच जिलों में सैनिक शासन लागू कर दिया गया। जनता के साथ नृशंस और कठोर व्यवहार किया गया। निर्दोष किसानों पर हवाई जहाज तथा मशीनगन से गोलियाँ बरसाई गई। यह आदेश दिया गया कि अंग्रेजों के सामने किसी सवारी पर न चढ़े, जहाँ भी अंग्रेज अफसर दिखे उन्हें झुक कर सलाम करें। इस तरह जनता पर तरह-तरह के अमानुषिक कार्य किए गए।

(ix) हंटर समिति :— सरकार के लाख प्रयत्न के बाद भी अमृतसर की घटनाओं पर पर्दा नहीं डाल सका। जनता की माँग पर सरकार को जाँच समिति का गठन करना पड़ा। सरकार ने लार्ड हंटर की अध्यक्षता में एक समिति बनाई। हंटर-समिति की रिपोर्ट निष्पक्ष नहीं हुई। उसने अधिकारियों के नृशंस कार्यों पर पर्दा डालने का प्रयास किया। सत्याग्रहियों को दोषी ठहराया गया।

(x) कांग्रेस द्वारा जाँच :— कांग्रेस ने भी इस कांड के लिए एक समिति का गठन किया। जिसमें महात्मा गाँधी, मोतीलाल नेहरू, अब्बास तैयबजी और डा० जयकर थे। समिति ने अपनी रिपोर्ट में अधिकारियों के अमानुषिक कार्यों की घोर निन्दा की।

Scanned with CamScanner

पंजाब की घटनाओं की जाँच-पड़ताल का कोई असर नहीं पड़ा, केवल जनरल डायर को नौकरी से हटा दिया गया। भारतीय जनता अब ब्रिटिश सरकार में विश्वास एवं उससे न्याय की आशा करने की स्थिति में नहीं रही। गाँधीजी पर इस घटना का तत्काल प्रभाव पड़ा और वे अँगरेजों के कट्टर असहयोगी बन गये।

(XI) खिलाफत आंदोलन :— प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की जर्मनी के साथ अँगरेजों के विरुद्ध युद्ध किया। अँगरेज युद्ध काल में मुसलमानों का सहयोग लेने के लिए उन्हें विश्वास दिलाया था कि युद्ध के बाद सरकार तुर्की के विरुद्ध प्रतिशोध की नीति नहीं अपनाएगा और न ही तुर्की साम्राज्य को छिन-भिन्न होने देगा, लेकिन अँगरेज वादे से मुकर गये। लेकिन उसके कुछ प्रदेशों को स्वतंत्र राज्य बना दिया और राज्य को ब्रिटेन और फ्रांस के अधीन कर दिया। सुलतान एक कैदी मात्र रह गया। उसकी दुर्दशा देख भारतीय मुसलमान तिलमिला उठे और अँगरेजी सरकार के विरुद्ध उनमें रोष उमड़ पड़ा। भारतीय मुसलमानों ने खिलाफत आंदोलन चलाया। इसे सफल बनाने के लिए महात्मा गाँधी ने देश का दौरा किया। 1920 ई० में डाक्टर अंसारी के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल इंगलैंड गया, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। खिलाफत समिति ने आंदोलन को चलाते रहने का निर्णय किया, यह आंदोलन असहयोग आंदोलन में मिल गया।

असहयोग आन्दोलन और उसकी प्रगति :— सितम्बर 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन बुलाया गया। इसका सभापतित्व लाला लाजपत राय ने किया। अधिवेशन में गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव उपस्थित किया। पंडित मोतीलाल नेहरू और अली बंधुओं ने उनके प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन किया। लेकिन मदन मोहन मालवीय, चितरंजन दास, श्रीमती बेसेंट तथा खारपड़े ने प्रस्ताव का घोर विरोध किया। गाँधीजी ने अपने सिद्धान्तों का पुरे देश में भ्रमण कर प्रचार किया, जनता में नयी उत्तेजना का संचार किया।

कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन :— 1920 में ही कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में असहयोग प्रस्ताव को विचारार्थ रखा। प्रस्ताव पूर्ण बहुमत से स्वीकृत हुआ सी० आर० दास

Scanned with CamScanner

लाला लाजपत राय जैसे अन्य नेताओं ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया। कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन कई मायनों में महत्वपूर्ण है। नागपुर अधिवेशन में कांग्रेस ने नया दृष्टिकोण अपना ले वैधानिक साधनों का परित्याग किया, सरकार का सक्रिय विरोध का निर्णय लिया और अहिंसा की नीति अपनाई गयी। डॉ० सीतारमैया का कहना था कि "नागपुर कांग्रेस के प्रस्ताव से भारत के इतिहास में एक नये युग का पादुर्भाव होता है।

असहयोग आंदोलन का कार्यक्रम :— कांग्रेस प्रस्ताव के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम निर्धारित किए गये थे।

(i) सरकारी उपाधियों तथा अवैतनिक पदों को त्यागना और स्थानीय संस्थाओं के मनोनीत सदस्यों द्वारा अपने-अपने पदों को रिक्त करना।

(ii) सरकारी दरबारों तथा उत्सवों और सरकार के सम्मान में आयोजित उत्सवों में सम्मिलित न होना।

(iii) सरकारी या सरकारी सहायताप्राप्त स्कूल एवं कॉलेजों का बहिष्कार करना और इनके स्थान पर राष्ट्रीय स्कूल व कॉलेज की स्थापना करना।

(iv) सरकारी अदालतों का बहिष्कार करना और इनके स्थानपर पंचायतों की स्थापना करना।

(v) सैनिकों, क्लर्क, और श्रमिकों द्वारा विदेश में नौकरी नहीं करना।

(vi) सुधारों द्वारा स्थापित होनेवाली व्यवस्थापिका सभाओं का बहिष्कार

(vii) विदेशी माल का बहिष्कार और स्वदेशी का प्रचार

असहयोग आंदोलन शुरू करने के पूर्व गाँधीजी ने संपूर्ण देश का दौरा किया। 1921 में जनता को आंदोलन से अवगत कराया। जुलाई 1921 में गाँधीजी के आह्वान पर पूरे देश में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई। अली बंधुओं को बेदी बनाने के कारण पूरे देश में जन-आंदोलन अक्रामक एवं व्यापक रूप धारण कर लिया, इससे पहले भारत में इतना बड़ा जन-आंदोलन कभी नहीं हुआ था।

Scanned with CamScanner